रमेश निशंक पोखरियाल

शिक्षित महिलाओं में नया भारत रचने का माद्दा

सौभाग्य से विश्व के बृहत्तम शिक्षा तंत्रों में से एक का पारिवारिक सदस्य होने के नाते सम्पूर्ण देश के शिक्षण संस्थाओं के दीक्षांत समारोहों में जाने का अवसर मिलता है। एक रुझान स्पष्ट रूप से सामने आता है कि हर क्षेत्र में हमारी बेटियां सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही हैं। डिग्रियों की बात हो या फिर स्वर्ण पदक विजेताओं का विषय हो, औसतन साठ प्रतिशत से अधिक हमारी बेटियों का होता है। कहीं-कहीं यह प्रतिशत 70-75 से अधिक हो जाता है। मैं इसे एक अत्यंत शुभ संकेत के रूप में देखता हूं। वस्तुतः विश्व के विकसित उन्नत राष्ट्रों ने अपना गौरवमयी स्थान अपने देश की महिलाओं को समुचित आदर प्रदान करके ही हासिल किया है। राष्ट्र निर्माण और विकास में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने नारी को पुरुष के समकक्ष बताते हुए कहा था कि 'जिस देश में नारी का सम्मान नहीं होता, वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता'। मेरा सदैव से यह मानना रहा है कि पुरुष का सम्पूर्ण जीवन नारी पर आधारित रहता है। कोई भी पुरुष अगर सफल है, तो उसकी सफलता की निर्माणकत्री नारी है। जीवन के कल्याण-अकल्याण, सुख-दुख, उत्थान-पतन, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, उत्कर्ष-अपकर्ष की समूची कहानी महिलाओं से होकर गुजरती है। वैसे भी देखा जाए तो बच्चा जब इस संसार में आता है, तो किशोरावस्था तक प्रथम गुरु के रूप में मां से उसका सबसे अधिक संसर्ग होता है। माताओं के संस्कार श्रेष्ठ न हुए तो बच्चों का स्वभाव भी मलिन बनने लगता है। यही कारण है कि स्त्री शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाज को संस्कारवान बनाने के लिए महिला शिक्षा उपयोगी नहीं, अनिवार्य है।

विकृतियां संस्कार की कमी से

एक सभ्य, विकसित, श्रेष्ठ समाज का निर्माण उस देश के शिक्षित नागरिकों द्वारा होता है, और नारी इस कड़ी का न केवल एक महत्वपूर्ण आधार है, बल्कि अनिवार्य शर्त भी है। जिस तरह एक-एक कोशिका जीवन का निर्माण करती है, वैसे ही प्रत्येक परिवार की छोटी-छोटी इकाइयां मिलकर एक समाज का गठन करती हैं। सभी इकाइयों की ऊर्जा स्रोत और सम्पूर्ण परिवार की केंद्र बिंदु नारी होती है। यदि एक नारी शिक्षित होती है, तो दो परिवार शिक्षित होते हैं, और जब परिवार शिक्षित होता है, तो पूरा राष्ट्र शिक्षित होता है। यही कारण था कि महान विचारक रूसो ने कहा है कि 'आप मुझे सौ आदर्श माताएं दें तो मैं आपको एक आदर्श राष्ट्र दूंगा'। अजर-अमर भारतीय संस्कृति में नारी को अत्यंत सम्मान देने की प्रेरणा मिलती है। हमारी संस्कृति हमें सिखाती है-यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता-अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। मां अर्थात माता के रूप में नारी धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानी जननी। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। चाहे भगवान राम रहे हों या गणेश/कार्तिकेय हों, कृष्ण हों, गुरुनानक हों, सदैव मां के रूप में कौशल्या, पार्वती, यशोदा और त्रिपता देवी की आवश्यकता पड़ती है। आज जब समाज में विभिन्न प्रकार की चुनौतियां यक्ष प्रश्न बनकर हमारे सम्मुख हैं, तो ऐसे में नई पीढ़ी को आत्मावलोकन करने की आवश्यकता है कि कैसे संस्कार देने में कमी रह गई है, जिस कारण समाज में विकृतियां आ रही हैं।

वैदिक काल की बात करें तो घोषा, लोपामुद्रा, सुलभा, मैत्रेयी और गार्गी जैसी विदुषियों ने बौद्धिक और आध्यात्मिक पराकाष्ठा के नये आयाम स्थापित किए। नई शिक्षा नीति में हमारा पूरा ध्यान इस बात पर केंद्रित है कि हमारी बालिकाएं कहीं भी पीछे नहीं रहें। भारत जब-जब पिछड़ा है, जब-जब अवनति हुई है, तब-तब हमने अपनी महिलाओं पर, उनकी शिक्षा पर, उनके कल्याण पर ध्यान नहीं दिया। बच्चे सबसे अधिक माताओं के सम्पर्क में रहा करते हैं। माताओं के संस्कारों, व्यवहारों व शिक्षा का प्रभाव बच्चों के मनमस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ता है। शिक्षित माता ही बच्चों के कोमल व उर्वर मनमस्तिष्क में उन समस्त संस्कारों के बीज बो सकती है, जो आगे चलकर अपने समाज, देश और राष्ट्र के उत्थान के लिए परम आवश्यक हैं।

सशक्त भागीदारी के लिए शिक्षा

नारी का कर्तव्य बच्चों का पालन-पोषण करने के अतिरिक्त अपने घर-परिवार की व्यवस्था और संचालन करना भी होता है। एक शिक्षित और विकसित मनमस्तिष्क वाली नारी अपनी परिस्थिति, घर के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता आदि का ध्यान रखकर उचित व्यवस्था व संचालन कर सकती है। जीवन रूपी गाड़ी चलाने के लिए महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सशक्त भागीदारी के लिए महिला शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। समाज, राष्ट्र, विश्व की प्रगति नारी शिक्षा के बल पर ही चरम सीमा तक पहुंच सकी है। यदि नारी जाति अशिक्षित हो तो वह अपने जीवन को विश्व की गति के अनुकूल बनाने में सदा असमर्थ रहेगी। यदि वह शिक्षित हो जाए तो न केवल उसका पारिवारिक जीवन स्वर्गमय होगा, बल्कि देश, समाज और राष्ट्र की प्रगति के युग का सूत्रपात हो सकेगा। भारतीय समाज में शिक्षित माता गुरू से भी बढ़ कर मानी जाती है क्योंकि वह अपने पुत्र को महान से महान बना सकती है।

भारत में नारी और पुरुष के बीच जब भी फर्क आया तब-तब उस व्याप्त अंतर की बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ी। वास्तव में गंभीरता के साथ देखा जाए तो यही ज्ञात होता है कि भारत की समस्याओं का एक प्रमुख वजह नारियों की अशिक्षा रही है। इसका फल यह हुआ कि जो राष्ट्र विश्व गुरु था, वही आज अपना पुराना वैभव, गौरव पाने हेतु संघर्षरत है। भारत सरकार सरकार हमारी बेटियों के कल्याण के लिए कृत-संकल्पित है। महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलायी गई हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, महिला हेल्पलाइन योजना, उज्ज्वला योजना, सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमेन, स्टेप महिला शक्ति केंद्र, पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए प्रतिनिधित्व देकर सरकार ने महिला सशक्तिकरण एवं विकास की एक नई इबारत लिखने की कोशिश की है। महिला शिक्षा हमारे राष्ट्र की सफलता और विकास की सीढ़ी है। महिला शिक्षा प्रत्येक परिवार, समाज, राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि परम आवश्यक भी है। महिला शिक्षा ऐसा सक्षम शस्त्र है, जो दुनिया को बदलने की क्षमता रखता है। नव भारत के निर्माण का नया अध्याय लिखने के लिए आवश्यक है कि हमारी प्रत्येक बेटी पढ़े और इस कुशलता से पढ़े कि वह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके। बेटियों को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और सफल बनाने की मुहिम में सरकार पूरी तत्परता से उनके साथ है। इसमें कोई संदेह नहीं कि नव भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में महिला शिक्षा एक सक्षम उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकती है। ■

मेरा सदैव से यह मानना रहा है कि पुरुष का सम्पूर्ण जीवन नारी पर आधारित रहता है। कोई भी पुरुष अगर सफल है, तो उसकी सफलता की निर्माणकत्री नारी है। जीवन के कल्याण-अकल्याण, सुख-दुख, उत्थान-पतन, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, उत्कर्ष-अपकर्ष की समूची कहानी महिलाओं से होकर गुजरती है। वैसे भी देखा जाए तो बच्चा जब इस संसार में आता है, तो किशोरावस्था तक प्रथम गुरु के रूप में मां से उसका सबसे अधिक संसर्ग होता है। माताओं के संस्कार श्रेष्ठ न हुए तो बच्चों का स्वभाव भी मलिन बनने लगता है। यही कारण है कि स्त्री शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है